नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में पर्यावरण विज्ञान पाठ्यक्रम कार्यशाला का समापन

जबलपुर। दिनांक 27 अक्टूबर 2018, दिन शनिवार को नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में **''पशुचिकित्सा एवं संबंधित विषयों के स्नात्तक स्तर हेतु पर्यावरण विज्ञान पाठ्यक्रम के भारतीय परिपेक्ष्य में संशोधन हेतु परिचर्चा''** विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता आचार्य डॉ. प्रयाग दत्त जुयाल जी, कुलपति, नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अतुल कोठारी जी, राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, विशिष्ठ अतिथि डॉ. सदाचारी सिंह तोमर, डॉ. गोविन्द प्रसाद मिश्रा, पूर्व कुलपति, ना.दे.प.चि.वि.वि., डॉ. कपिल देव मिश्र, कुलपति, रा.दु.वि.वि., श्रीमती रेखा बहिन जी, राष्ट्रीय संयोजिका, बालिका भारती, श्री डॉ. आंनद राव, प्रचारक, जबलपुर विभाग, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के आतिथ्य में उद्घाटन सत्र का शुभारंभ हुआ। मंचासीन अतिथियों का स्वागत तुलसी युक्त गोबर के गमले, शाल एवं श्रीफल से किया गया। स्वागत उद्बोधन में डॉ. श्रीकांत जोशी, आयोजक सचिव ने पशुचिकित्सा एवं संबंधित विषयों के स्नात्तक स्तर हेतु पर्यावरण विज्ञान पाठ्यक्रम के भारतीय

परिपेक्ष्य में संशोधन हेतु परिचर्चा विषय पर आयोजित कार्यशाला पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अग्रिम कड़ी में डॉ. सदाचारी सिंह जी तोमर द्वारा पावर पांइट प्रिजेटेशन के द्वारा पर्यावरण पाठ्यक्रम का परिचय दिया गया। तत्पश्चात् मंचासीन अतिथियों द्वारा कार्यशाला स्मारिका व पंचगव्य उत्पादों के फोल्डर का विमोचन किया गया। साथ ही सेंट जोसेफ स्कूल के बच्चों को पाठ्य सामग्रीयों का वितरण किया गया।

इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि श्री अतुल कोठारी जी ने उद्बोधित करते हुये कहा कि पशुचिकित्सा एवं संबंधित विषयों के स्नात्तक स्तर हेतु पर्यावरण विज्ञान पाठ्यक्रम के भारतीय परिपेक्ष्य में संशोधन हेतु परिचर्चा के माध्यम से पाठ्यक्रम में संशोधन हेतु प्रस्ताव तैयार कर किया जावेगा, ताकि उसका अनुपालन विश्वविद्यालय में कराया जा सके। इस कार्यक्रम की पहल सन् 2014–15 में तकनीकी संस्थान, नई दिल्ली से गई, और इसी कड़ी में आज ना.दे.प.चि.वि. वि., जबलपुर में एक दिवसीय कार्यशाला के रूप में आयोजित की गई है। साथ ही आपने अवगत कराया कि प्लास्टिक/पॉलीथिन मानव जीवन में कैंसर जैसे रोगों में वृद्धि कारक है। आज के परिपेक्ष्य में शिक्षा हेतु भारतीय आध्यात्मिक दृष्ट्रिकोण का समावेश हर पाठ्यक्रम शामिल होना आवश्यक है, ताकि पीढ़ी–दर पीढ़ी भारतीय संस्कृति परिवेश में वैज्ञानिक अनुसंधानों के बल पर पर्यावरण के संतुलन हेतु समग्र प्रयास किये जा सकें। निर्मित पाठ्यक्रम में यह प्रावधान किया गया है, कि स्वमेव व्यवस्था के तहत् प्रत्येक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों का रोजमर्रा के जीवन यापन में आत्मसात करे। मुख्य अतिथि की आसंदी से उद्बोधित करते हुये माननीय श्री कोठारी जी ने विश्व की ज्वलंत समस्याओं में आतंकवाद व पर्यावरण को सर्वोपरि बताया, उनके कथनानुसार आतंकवाद की समस्याओं से तो मानव निर्मित संसाधनों से दूर किया जा सकता है, परंतु पर्यावरण प्रदूषण की समस्या का निदान जन–जन की भागीदारी के बिना संभव नहीं है। उद्बोधन के अंत इस विश्वविद्यालय द्वारा जो तुलसी युक्त गोबर के गमलों द्वारा स्वागत एवं प्लास्टिक रहित पेयजल की मंच एवं कार्यक्रम में जो पहल की उसकी भूरि–भूरि प्रशंसा की गई एवं यह अपेक्षा जाहिर की, कि यह व्यवस्था भविष्य में भी अनवरत जारी रहे।

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर के यशस्वी कुलपति, प्रोफेसर, डॉ. प्रयाग दत्त जुयाल जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्वविद्यालय की उन्नति एवं पर्यावरण जागरूकता के संबंध में विचार व्यक्त करते हुये कहा कि यह देश का प्रथम विश्वविद्यालय है, जो पशुधन के अपविष्ट गौ–मूत्र, गोबर आदि से जैविक खाद, गोबर के गमले, एवं पंचगव्य उत्पादों को निर्मित करने एवं ग्रामीण अंचलों में इस कार्य को प्रोत्साहित

करने की दिशा में जागरूकता अभियान अनवरत जारी है, तथा भविष्य में पशुधन विकास योजनाओं में पर्यावरण के महत्व को पशु चिकित्सा पाठ्यक्रम में संशोधन किये जाने पर बल दिया। साथ ही आपने यह भी कहा कि इस कार्यशाला के तकनीकी सत्रों में पर्यावरण से संबंधित विभिन्न विषयों पर व्याख्यान सामूहिक चर्चा और अनुशंसायें निशिचित रूप से गौ–वंश के गौ–मूत्र एवं गोबर से निर्मित पंचगव्य उत्पाद हमारे पशुपालकों जो ग्रामीण अंचलों में है, उससे पर्यावरण सुधार तो होगा ही, साथ ही कृषकों की आय में दो–गुनी वृद्धि में भी सहायक सिद्व होगें, जिससे राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख जी एवं माननीय प्रधानमंत्री जी, भारत सरकार के स्वप्नों को साकार करेंगे। इस कार्यशाला के उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. अमिता तिवारी ने एवम् आभार प्रर्दशन डॉ. राजेश शर्मा, छात्र कल्याण अधिष्ठाता जी ने किया।

इस कार्यशाला के तीन तकनीकी सत्रों में डॉ. एच.एस. शर्मा द्वारा पर्यावरण की भारतीय अवधारणा, डॉ. आदित्य मिश्रा द्वारा पर्यावरण परिवर्तन के प्रभाव–पशुओं और उसके सहयोगी विषय, पर्यावरण पाठ्क्रम में पशु विज्ञान, पर्यावरण मुददों पर चर्चा व उभरते मुददे, डॉ. अंजना शर्मा द्वारा पर्यावरण परिवर्तन के प्रभाव संबंधी उद्बोधन, पशु चिकित्सा के पर्यावरण पाठ्यक्रम में प्रयोगिता का समावेश, भारतीय परिवेश में शहरी तथा ग्रामीण संदर्भ में पर्यावरण, पशु चिकित्सा स्नात्तक के वर्तमान पाठ्यक्रम पर परिचर्चा एवं विश्लेषण एवम् पशु चिकित्सा के स्नात्तक स्तर हेतु निर्मित पाठ्यक्रम की रिपोर्ट आदि का व्याख्यान द्वारा प्रस्तुतिकरण किया गया। नवीन पाठ्यक्रम पर देश व प्रदेश के विख्यात शिक्षाविदों एवं पर्यावरणविदों–डॉ. सदाचारी सिंह तोमर, डॉ. यश पाल साहनी, डॉ. एस.एन.एस. परमार एवं डॉ. आर.पी.एस. बघेल द्वारा विस्तृत सामूहिक चर्चा एवं सुझाव दिये गये।

इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के संचालकों, विभागाध्यक्षों, प्राध्यापकों, अधिकारियों, छात्र–छात्राओं, प्रेस एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कार्यशाला कार्यक्रम के अंत में डॉ. आदित्य मिश्रा ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।